بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 02 मई 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

मौता नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-02.05.2025

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मौता नामक युद्ध का वर्णन हो रहा था इसके संदर्भ में और अधिक विस्तार इस प्रकार है कि जब आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. को विदा किया तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स! मुझे किसी ऐसी चीज़ का आदेश दें जो मैं आपकी ओर से याद कर लूं। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- कल तुम ऐसे नगर में पहुंचोगे जहां सजदे कम होते हैं, अतएव तुम वहाँ अत्यधिक सजदे करना।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह बहुत बड़ी नसीहत है, आजकल हम जिन देशों में रह रहे हैं यहाँ लोग ख़ुदा को भुला चुके हैं। इस दौर में अहमदियों को अपनी इबादतों की ओर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए। फिर आप रज़ी. के निवेदन पर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे फ़रमाया कि अल्लाह तआला को याद रखा करो, उसकी याद हर मामले में तुम्हारी सहायक है। जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. जाने लगे तो वापस आए और निवेदन पूर्वक कहा, ऐ अल्लाह के रसूल स.- अल्लाह वितर है और वितर को पसन्द करता है, तो आप स. ने फ़रमाया- सवाल करते ही करते जाओगे, ऐ इब्ने रवाहा? अब बस करो। जब तू पश्चाताप करना चाहे, और यदि तू ने दस आदमियों से बुराई की हो तो एक आदमी के साथ नेकी और भलाई करने के बाद रुक मत जाना। अर्थात- इतनी बुराईयों के बाद भी यदि अल्लाह तआला के लिए नेकी करोगे, अल्लाह तआला का भय दिल में होगा तो अल्लाह तआला क्षमा करने वाला है। अतः अल्लाह तआला भलाई करने वालों को क्षमा करता है उसकी दया अत्यन्त विशाल है। जहां तक हो सके इस प्रयास में रहो कि भलाई करनी है और बुराई से बचना है,

यह नहीं कि हर बार दस बुराईयाँ करो और उसके बाद कहो कि एक नेकी कर ली। अतएव आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह फ़रमाया कि तू एक नेकी करने के बाद रुक मत आना, इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने निवेदन किया- या रसूलुल्लाह स, मैं इसके बाद आपसे कोई सवाल नहीं करूंगा।

जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. को अलविदा किया तो वे रो पड़े, लोगों के पूछने पर आप रज़ी. ने अल्लाह की क़सम खा कर कहा कि मुझे ना संसार से प्रेम है और न तुमसे। मैंने रसूलुल्लाह स. को यह आयत पढ़ते हुए सुना है, जिसमें आग का वर्णन है तथा मैं नहीं जानता कि आग पर पेश होने के बाद मेरी क्या हालत होगी। इस पर लोगों ने उन्हें सांतवना दी और दुआ दी कि कुशलता पूर्वक आप हमारी ओर वापस आएं।

जुमः के दिन अभियान में शामिल समस्त लोग रवाना हो गए, किन्तु हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने यह सोचा कि मैं जुमः की नमाज़ रसूलुल्लाह स. के पीछे अदा करके उनसे जा मिलूंगा। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देख कर पूछा कि तुझे किस चीज़ ने अपने साथियों के साथ जाने से रोके रखा? इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि मैंने चाहा कि आप स. के साथ जुमः की नमाज़ अदा करके अपने साथियों से जा मिलूं। आप स. ने इस पर फ़रमाया कि ज़मीन में जो कुछ है यदि तुम वह सब ख़र्च कर डालो, तो जो लोग उस अभियान पर रवाना हो गए हैं तुम उनके फ़ज़ल को नहीं पा सकते।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. एक निपुण घुड़ सवार थे, वे भी इस अभियान में एक सामान्य सैनिक के रूप में सम्मिलित थे। इस अभियान की रवानगी के समय हज़रत खालिद रज़ी. को इस्लाम क़ुबूल किये हुए अभी तीन महीने हुए थे। मुसलमान अभी रवाना ही हुए थे कि दुश्मनों को मुसलमानों के रवाना होने की सूचना मिल गई और उन्होंने भी सेना गठित करना शुरू कर दी। मुसलमानों को ख़बर मिली कि उसमें सैनिकों की संख्या लगभग एक लाख है। उस अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने सहाबियों को प्रोत्साहित किया और उन्हें कहा कि दोनों, अर्थात शहादत और विजय में से दोनों ही तुम्हारे लिए लाभकारी हैं और इसी की तुम अभिलाषा करके निकले थे। यह सुन कर पूरी सेना ने कहा कि इब्ने रवाहा रज़ी. ने ठीक कहा। सहाबी रज़ी. आगे बढ़े तो मुशारफ़ नामक बस्ती के निकट उन्हें हर्कुल की सेना मिली जो रोम एवं अरब के लोगों के साथ थी। मुसलमानों ने उन्हें देखा तो उस बस्ती की ओर निकल गए जिसे मौता कहा जाता है। इस स्थान पर मुसलमानों ने युद्ध की तय्यारी की, हज़रत अबू हुरैरह रज़ी. उस युद्ध में शामिल हुए थे, वे कहते हैं कि जब दुश्मन हमारे निकट हुआ तो हमने इतनी अधिक संख्या, इतनी अच्छी तय्यारी, घोड़े एवं सोना इत्यादि पहले न देखा था, उसे देख कर मेरी तो आँखें चुँधिया गईं। इस पर मुझे हज़रत साबित रज़ी. ने कहा कि तुम यह विशाल सेना देख रहे हो, तुमने हमारे साथ बदर की लड़ाई नहीं देखी, हम वहाँ भी अधिकता के कारण ग़ालिब नहीं आए।

जब युद्ध शुरू हुआ तो घोर संग्राम हुआ और हज़रत ज़ैद रज़ी. ने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे को लेकर जिहाद किया और दलेरी से शहादत को प्राप्त हुए। उसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ी. ने इस्लाम का झंडा संभाला और जिहाद किया, यहाँ तक कि वे भी शहीद हो गए। एक रिवायत

के अनुसार हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ी. ने अपने दाएं हाथ में झंडा थामा, जब वह कट गया तो बाएँ हाथ में झंडा पकड़ लिया, जब वह भी कट गया तो आप रज़ी. ने इस्लाम के झंडे को अपनी कोहनियों से पकड़ कर छाती से लगा लिया। शहादत के समय उनकी आयु 33 वर्ष थी। शहादत के बाद आप रज़ी. के शरीर पर लगभग साठ घाव देखे गए, उनमें से कोई घाव भी आपकी पीठ पर नहीं था।

आप रज़ी. की शहादत के बाद इस्लामी सेना का झंडा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने थाम लिया। आप रज़ी. को मांस का एक टुकड़ा पेश किया गया कि लड़ाई से पहले इससे कुछ ऊर्जा प्राप्त कर लें। अभी आप रज़ी. ने उसमें से कुछ भाग तोड़ा ही था कि एक ओर से तलवारें चलने की आवाजें आईं। आप रज़ी. ने अपने आपसे कहा कि तू अभी तक इस संसार में ही है, अर्थात युद्ध शुरू हो गया है और तू मांस खा रहा है। आप रज़ी ने वह मांस का टुकड़ा छोड़ा और तुरंत युद्ध में कूद पड़े और अत्यंत वीरता से लड़ते हुए शहीद हो गए और उनके हाथ से झंडा गिर गया। जब अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. शहीद हो गए तो मुसलमानों को घोर हानि हुई एवं कोई दो मुसलमान भी एकजुट होकर लड़ते नज़र ना आते थे। ऐसे में एक अन्सारी व्यक्ति ने इस्लामी झंडा उठा लिया, वह दौड़ता हुआ आया उसने लोगों के आगे झंडा गाड़ दिया। फिर उसने कहा कि लोगो! मेरी ओर आओ, लोग उसकी तरफ़ जमा हो गए। जब यह संख्या अधिक हो गई तो वे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के पास गए। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने कहा कि मैं इसे तुम से नहीं लूँगा, तुम इसके अधिक पात्र हो। इस पर उस अन्सारी ने कहा कि मैंने यह झंडा पकड़ा ही आपके लिए है। जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने झंडा थामा तो उन्होंने लोगों का बचाव किया, उन्हें समेट कर एकत्र किया और इस्लामी सेना को एक ओर हटा लिया। दुश्मन भी इनसे पीछे हट गया और वे लोगों को बचा कर वापस ले आए। इब्ने इस्हाक़ के अनुसार रोमियों से यह दूर हटना ही वास्तव में उनसे बचना था, क्यूंकि उस समय तीन हज़ार में से दो हज़ार मुसलमान सैनिक दुश्मन की सेना से मिल गए थे, अर्थात दोनों सेनाएं आपस में गुडमुड हो गई थीं, दुश्मन ने पूर्णतः मुसलमानों को घेर लिया था और वे इन पर पूरी तरह छा गए थे, ऐसे में मुसलमानों को बचाकर निकाल लेना ही विजय समान था। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि विजय के भी कई रूप होते हैं।

नबी करीम स. ने हज़रत ज़ैद रज़ी. जाफ़र रज़ी. और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. की शहादत के विषय में लोगों को बताया, इससे पहले कि उनकी ख़बर आती। आप स. ने फ़रमाया कि ज़ैद ने झंडा लिया और वे शहीद हो गए, फिर जाफ़र ने झंडा लिया और वे भी शहीद हो गए, फिर इब्ने रवाहा ने लिया और वे भी शहीद हो गए। आप स. की आँखें आंसू बहा रही थीं, फिर आप स. ने फ़रमाया कि इसके बाद झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने ले लिया और अल्लाह ने उनके हाथ पर मुसलमानों को विजय प्रदान कर दी। उस दिन से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. को सैफुल्लाह अर्थात अल्लाह की तलवार कहा जाने लगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने इस्लामी सेना का नेतृत्व संभाला तो आप रज़ी. ने सेना के आगे वाले भाग को पीछे एवं पीछे वाले भाग को आगे कर दिया, दाएं भाग को बाएँ ओर एवं बाएँ भाग को दाएं ओर कर दिया तथा ख़ूब ज़ोर से नारे लगाए जिससे

दुश्मन ने यह समझा कि मुसलमानों के लिए सहायता आ गई है तथा वह पीछे हट गया और ख़ालिद रज़ी. मुसलमानों को बचा कर वापस ले आए।

झन्डे के मान सम्मान का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- जब किसी क़ौम के लोगों के दिलों में उनके झंडे की मर्यादा स्थापित कर दी जाती है तो वह उन्हें इस बात के लिए तय्यार कर देती है कि यदि अपने झंडे की रक्षा के लिए उन्हें अपनी जानें क़ुर्बान करनी पड़ें तो निःसंकोच प्राणों की बलि दे दें, क्यूंकि उस समय छोटी सी लकड़ी और कपड़े का सवाल नहीं होता बल्कि क़ौम की मर्यादा का सवाल होता है जो उदाहरण के रूप में झंडे की अवस्था में उनके सामने मौजूद होता है।

यह वर्णन आगे जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर ने दुनिया के सामान्य हालात के लिए दुआएं जारी रखने की ओर ध्यान दिलाया कि विशेष रूप से आजकल पाकिस्तान एवं हिन्दुस्तान के जो हालात हैं उनके लिए दुआ करें, अल्लाह तआला अत्याचार को समाप्त करे, पीड़ितों की रक्षा करे, शासकों को बुद्धि दे कि युद्धों की ओर बढ़ाने के बजाए सुलह सफ़ाई से समस्स्याओं को सुलझाएं। अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों का पालन करने वाले हों, और अल्लाह तआला अन्तर्राषट्रीय संगठनों को भी, जहां आजकल न्याय मिलना तो कठिन होता है, परन्तु अल्लाह तआला करे, इन संगठनों को भी तौफ़ीक़ दे और दोनों ओर के सहानुभूति करने वालों और दोस्तों को भी तौफ़ीक़ दे कि देशों की आपस की समस्स्याओं का समाधान करवा सकें, अल्लाह तआला दोनों पक्षों को बुद्धि दे। लड़ाई होती है तो दोनों ओर हानि होती है और फिर केवल राजनेता ही नहीं बल्कि जनता और पीड़ित लोग अकारण मारे जाते हैं, यही हम आजकल युद्धों में देख रहे हैं, यही हो रहा है हर जगह, अतएव दुनिया के सब पीड़ितों के लिए दुआ करें। प्रत्यक्षतः दुनिया विनाश के मुख पर खड़ी है, अल्लाह तआला ही इसे विनाश से बचाए और यह उसी समय हो सकता है जब ये ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला इन्हें तौफ़ीक़ दे और हमें भी दुआओं की तौफ़ीक़ दे।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने एक शहीद मुकर्रम मुहम्मद आसिफ साहब इब्ने मुकर्रम रफीक़ अहमद आफ़ भलेर ज़िला क़सूर का सदवर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। शहीद मरहूम को अहमदिय्यत के दुश्मनों ने 24 अप्रैल को फ़ाइरिंग करके शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैही राजिऊन। शहादत के समय मरहूम की आयु 19 वर्ष थी। मरहूम नेक, आज्ञा पालन करने वाले, वीर, ज़ेली तन्ज़ीमों में भाग लेने वाले, शुद्ध आचरण वाले, ख़िलाफ़त से प्रेम करने वाले नौजवान थे। हुज़ूरे अनवर ने मरहूम की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तान में आतंक मचाने वालों और जमाअत का विरोध करने वालों के साहस बढ़ते जा रहे हैं, अल्लाह तआला जल्द इनकी पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131